पाठ 7. रावण-वध

पाठ का उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य लड़कियों के प्रति समानता का भाव रखने पर बल देना है। समाज में नर-नारी का समान महत्त्व है। अत: लिंग के आधार पर भेदभाव नहीं होना चाहिए। इस पाठ में नारी के प्रति सकारात्मक सोच अपनाने तथा उनको समाज में पुरुष के बराबर अधिकार देने की वकालत की गई है।

पाठ का सारांश

यह पाठ नाटक विधा में रचित है। इसमें लड़के रावण का पुतला बना रहे थे तभी वहाँ नीना और स्मिता आती हैं। वे भी उनके साथ रावण का पुतला बनाने में मदद करना चाहती हैं। परंतु लड़के उनका मज़ाक उड़ाने लगते हैं। नीना और स्मिता नाराज़ होकर वहाँ से चली जाती हैं। वे मुक्ता दीदी की सहायता से रावण का पुतला बनाती हैं। मंच पर लड़के और लड़कियों दोनों के पुतले सजे हैं। वेलफेयर एसोसिएशन के अध्यक्ष त्यागी जी स्टेज पर सभी को संबोधित करते हैं। लड़कियाँ अपने रावण के पुतले के दस सिरों के द्वारा समाज में उनके प्रति होने वाले अत्याचार और भेदभाव के बारे में बताती हैं। त्यागी जी लड़कियों के साहसिक प्रयास की प्रशंसा करते हैं। सभी तालियाँ बजाते हैं। लड़कों को स्वयं पर शर्मिंदगी महसूस होती है।

अध्यापन संकेत

पाठ पढ़ाने से पूर्व **पठन-पूर्व चर्चा** के अंतर्गत दिए गए प्रश्न बच्चों से पूछकर पाठ की रूपरेखा तैयार करें, जिससे बच्चों को पाठ समझने में आसानी हो। पाठ का आदर्श वाचन करें। बच्चों से एक-एक अंश का पठन करवाएँ। उन्हें सभी के प्रति समानता का भाव रखने के लिए प्रेरित करें।

पाठ से संबंधित कुछ विशेष बातों पर बच्चों से विचार-विमर्श करें–

- ‘कुपोषण से क्या अभिप्राय है?
- छोटी उम्र में विवाह से लड़कियों पर क्या प्रभाव पड़ता है? इस पर कक्षा में चर्चा करें।
- बच्चों को एक-दूसरे के साथ मिलकर रहने एवं साथ में काम करने की सीख दें।
- पाठ में वर्णित बुराइयों के अलावा आप समाज की और किन-किन बुराइयों के बारे में जानते हैं? चर्चा कीजिए।

डिजिटल (Digital) के माध्यम से पाठ की ई-बुक विद्यार्थियों को दिखाकर पाठ के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।